FOR, P.G- Sem-3
UNIT-III, CC-13

REVOLUTIONARY NATIONALIST MOV-
(PART-1)

Page No.: 1

क्रांतिकारी राष्ट्रवादी आंदोलन (भाग-1)

20वीं सदी की शुरुआत में भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में एक नया पहलू जुड़ा और क्रांतिकारी आंतकवाद राजनीतिक हथियार के रूप में उदय हुआ। क्रांतिकारी आतंकवाद राजनीतिक गतिविधि का एक ऐसा रूप था जिसे राष्ट्रीय युवा वर्ग की अत्यधिक प्रेरित पीढ़ी ने अपनाया था।

गरम दल द्वारा नरम दल की राजनीति की आलोचना ने इन युवाओं को यह विश्वास दिलाया था कि प्रार्थना तथा तर्कों द्वारा ब्रिटिश सरकार को परिवर्तित करने का प्रयास बेकार था। स्वदेशी आंदोलन में भी उन्होंने इसलिए जमकर हिस्सा लिया था कि बहिष्कार और सत्याग्रह जैसे नये उग्र तरीकों से राष्ट्रीय आंदोलन को गति दी जा सकेगी और ब्रिटिश सरकार को घुटने टेकने पर मजबूर किया जा सकेगा। लेकिन स्वदेशी आंदोलन जनता के एक बड़े हिस्से को लामबंद करने में आंशिक रूप से सफल रहा। जनमानस को लामबंद करने का यह पहला प्रयास था और इसके तरीके सबों के लिए अपरिचित थे। इस प्रयास की असफलता के बाद युवा वर्ग को लगा कि जन-जागृति के लिए शायद कुछ और अधिक नाटकीय करने की आवश्यकता थी

क्रांतिकारी आतंकवादी प्रवृत्तियों को बढ़ावा मिलने का एक कारण सरकार द्वारा स्वदेशी आंदोलन का क्रूर दमन था। उदा॰ के लिए 27 अप्रैल 1906 की बारीसाल राजनीतिक कॉन्फ्रेंस में शामिल शांतिपूर्ण भीड़ पर पुलिस के अकारण, हमले के बाद 'युगांतर' ने लिखा – बल को बल से ही रोका जाना चाहिए 1907 में नरम दल और गरमदल में कांग्रेस विभाजन के बाद सरकारी दमन में वृद्धि हुई, क्योंकि गरम दल के दमन से नरम दल नाराज नहीं होता था। तिलक को छः वर्ष के लिए बर्मा निर्वासित कर दिया गया और अरविंद घोष को क्रांतिकारी षडयंत्र केस में गिरफ्तार कर लिया गया।

इन सभी कारणों से युवा पीढ़ी के सामने नरमपंथी दल की व्यर्थता तो स्पष्ट हुई ही, वह इसलिए भी अशांत हो उठा कि गरमदल भी सरकार से तुरंत कोई रियायत ले सकने में विफल रहा। ऐसे में युवा पीढ़ी ने व्यक्तिक वीरता

दिखाने का रास्ता अपनाया। यह वही रास्ता था जिसे पहले आयरलैंड के राष्ट्रवादियों और रूसियों ने अपनाया था। हालांकि उनका मानना था कि साम्राज्यवाद को अंतत: उखाड़ फेंकने के लिए जनता द्वारा हथियारबंद विद्रोह आवश्यक है लेकिन इस कार्य में कई कठिनाइयां थी इसीलिए तुरंत कार्यवाही के तौर पर ब्रिटिश बदनाम अधिकारियों की हत्या करनी शुरू कर दी। इसका मकसद (a) अधिकारियों में दहशत फैलाना (b) लोगों की उदासीनता तथा भय दूर करना (c) राष्ट्रीय चेतना जगाना था।

इस प्रवृत्ति की असली शुरुआत अप्रैल 1908 में हुई जब खुदीराम बोस तथा प्रफुल्ल चाकी द्वारा न्यायधीश किंग्सफोर्ड की गाड़ी पर बम फेंका गया लेकिन दुर्भाग्यवश उसमें दो अंग्रेज औरतें यात्रा कर रही थी। पकड़े जाने के बदले प्रफुल्ल चाकी ने स्वंय को गोली मार लिया लेकिन खुदीराम बोस गिरफ्तार हुए और फांसी पर लटका दिये गये। सरकार ने इस अवसर पर अरविंद घोष और उनके भाई वीरेन्द्र घोष को एक षड्यंत्र केस में फसाना चाहा जिसमें अरविंद घोष तो छूट गये लेकिन वारीद्र घोस समेत कई लोगों को निर्वासन तथा कठोर कारावास जैसी सजाएं दी गयी।

अंग्रेजी सरकार के दमन के फलस्वरूप गुप्त संस्थाएं बनने लगी, बहुत सी हत्याएं हुई तथा हथियार खरीदने के लिए स्वदेशी डकैतियां डाली गई। बंगाल में क्रांतिकारी गतिविधियों का संचालन 'अनुशीलन' और युगांतर जैसी संस्थाओं द्वारा किया गया। महाराष्ट्र में पूना, नासिक तथा बम्बई क्रांतिकारी गतिविधियों के केन्द्र बने। मद्रास में भारत माता एसोसिएशन के 'वांची अय्यर' ने गरमदलीय नेता चिदम्बरम् पिल्लई की गिरफ्तारी का विरोध कर रही भीड़ पर गोली चलानेवाले अफसर की हत्या कर दी। लंदन में मदनलाल धींगरा ने कर्जन वाइली (इंडिया हाउस के अधिकारी) की हत्या कर दी तथा रासबिहारी बोस ने 23 दिं 1912 को दिल्ली में प्रवेश कर वायसराय लार्ड हार्डिंग पर कातिलाना हमला किया।

श्यामजी कृष्ण वर्मा, लाला हरदयाल, वी० डी० सावरकर, अजीत सिंह, मैडम कामा ने यूरोप में केन्द्र स्थापित किये जहाँ से वे क्रांतिकारी संदेश प्रचारित करते रहे।

कुल मिलाकर 1908-18 के बीच 186 क्रांतिकारी या तो मारे गये या पकड़े गये। कठोर दमन, क्रूर नियमों और लोकप्रियता के अभाव के कारण क्रांतिकारी आतंकवाद की लहर धीरे-धीरे धीमी पड़ गई। इसमें कोई संदेह नहीं कि व्यक्तिक वीरता के कारनामों से खुदीराम बोस और प्रफुल्ल चाकी जैसे कई वीर लोकप्रिय हो गये लेकिन इस प्रकार के राजनीतिक कार्यवाही का अनुकरण केवल कुछ व्यक्तियों द्वारा ही संभव था, जनसमुदाय द्वारा नहीं।

प्रथम विश्वयुद्ध के दौरान क्रांतिकारी आंदोलनकारियों को बुरी तरह कुचल दिया गया तथा युद्ध पश्चात ही वे आम माफी के तहत रिहा हुए। इसी समय असहयोग आंदोलन शुरू हुआ तथा गांधी, सी.आर. दास आदि नेताओं की अपील पर वे क्रांतिकारी असहयोग के माध्यम से एक साल के भीतर स्वराज का प्रयास करने पर सहमत हो गये। आंदोलन की अचानक वापसी और ससूरी रवैये से क्षुब्ध होकर ये लोग पुन: पुरानी लीक पर चल पड़े।

धीरे-धीरे क्रांतिकारी आंतकवाद की दो स्पष्ट धाराएँ विकसित हुई: (एक) पंजाब, उ० प्र० और बिहार में (b) बंगाल में। ये दोनों धाराएँ नई सामाजिक-शक्तियों से प्रेरित-प्रभावित हुई। ये थी प्रथम विश्वयुद्ध के बाद उपजा मजदूर वर्ग, रूसी क्रांति की प्रेरणा, साम्यवादी जो मार्क्सवाद, समाजवाद और सर्वहारा के सिद्धांत का प्रचार कर रहे थे।

उत्तर भारत में रामप्रसाद बिस्मिल, योगेश चटर्जी और शचीन्द्र शान्याल जैसे युवाओं ने मिलकर कानपुर में हिन्दुस्तान रिपब्लिकन आर्मी (HRA) का गठन 1924 में किया तथा अपना लक्ष्य विदेशी सत्ता को उखाड़कर एक संघीय गणतंत्र 'युनाइटेड स्टेट ऑफ इंडिया' की स्थापना घोषित किया। पैसों की जरूरत के लिए 'काकोरी कांड' हुआ जिसमें अशफाकुल्ला, राम प्र० बिस्मिल, रोशन सिंह, राजेन्द्र लाहिरी फांसी पर चढ़ गये किंतु चन्द्रशेखर आजाद फरार हो गये।

भगतसिंह, भगवतीचरण वोहरा और सुखदेव के प्रयासों से हिन्दुस्तान रिपब्लिकन आर्मी का लक्ष्य 'समाजवादी' घोषित हुआ और 1928 में Hindustan Socialist Republican Association का गठन किया। दरअसल युवा क्रांतिकारी

संगठित क्रांति की कोशिश में जुटे थे। इन क्रांतिकारियों को लाजपत राय पर लाठी बरसाने का कार्य अपमान जैसा लगा फलतः 1928 में भगतसिंह, चन्द्रशेखर आजाद, राजगुरु ने लाहौर में सांडर्स की हत्या कर दी। उन्होंने कहा कि - सांडर्स की हत्या से हमें दुःख है पर वह उस अमानवीय एवं अत्याचारी व्यवस्था का अंग था जिसे नष्ट करने के लिए हम संघर्ष कर रहे हैं। इनकी दूसरी महत्वपूर्ण कारवाई सार्वजनिक सुरक्षा कानून और ट्रेड डिस्प्यूट्स बिल के खिलाफ सेंट्रल लेजिस्लेटिव एसेम्बली में भगत सिंह और बी. के दत्त द्वारा बहरों को सुनाने के लिए बम फेंकना था।

लाहौर षड्यंत्र केस में भगतसिंह, राजगुरु सुखदेव को मुकदमा चलाकर फांसी दी गई लेकिन क्रांतिकारियों ने मेरा रंग दे बसंती चोला, इंकलाब-जिंदाबाद, साम्राज्यवाद मुर्दाबाद सर्वहारा जिंदाबाद जैसे नारे देकर हंसते हुए फांसी के फंदे को गले लगाया और राष्ट्रीय नायकत्व प्राप्त किया। 1931 में जतिन दास जेल के में अमानवीय दशाओं के खिलाफ 64 दिनों की भूख-हड़ताल के बाद दम तोड़ दिया।

उधर बंगाल में सी. आर. दास की स्वराजी राजनीति के मृत्यु बाद शिथिल पड़ जाने से स्वराजी दो गुटों में बँट गये - सुभाष का मुंगातर गुट और जे. एम. सेन. गुप्त का अनुशीलन गुट। कुछ नये विद्रोही संगठन उभरे जिनमें सर्वाधिक सक्रिय था - चटगाँव के सूर्य सेन गुट। 'मास्टर दा' के नाम से लोकप्रिय कविताप्रेमी सूर्यसेन का व्यक्तित्व प्रेरणास्पद था। गणेश घोष, लोकीनाथ बाउल, अनंत सिंह आदि सूर्यसेन के शिष्यों ने 1930 में चटगाँव के पुलिस तथा सैन्य शस्त्रागार पर धावा बोलकर कब्जा जमा लिया। इस कारवाई में 65 क्रांतिकारी शरीक थे तथा सूर्यसेन गाँधी टोपी व खादी वस्त्र धारण कर उन्हें नेतृत्व प्रदान कर रहे थे।

शस्त्रागार लूट के बाद इन क्रांतिकारियों को चटगाँव की पहाड़ियों में दर-दर भटकना पड़ा उनके जी के लेना लगी रही। अंततः संघर्ष में 80 सैनिक और 12 क्रांतिकारी मारे गये। सूर्यसेन भी 1933 में गिरफ्तार हुए तथा 1934 में उन्हें फांसी दे दी गई।

(TO BE CONTINUED)